इस सम्मेलन की सम्माननीय सभापति एवं अध्यक्ष, लोक सभा श्रीमती मीरा कुमार जी, माननीय उप सभापति, राज्य सभा, श्री के. रहमान जी, राज्य विधान मण्डलों से पधारे माननीय पीठासीन अधिकारीगण, देवियो और सज्जनो,

विश्व में गुलाबी नगर के नाम से विख्यात राजस्थान की राजधानी जयपुर में आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। 32 साल बाद जयपुर को एक बार फिर इस सम्मेलन की मेजबानी करने का अवसर मिला है। सन् 1727 में महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा बसाया गया यह शहर अपनी मनमोहक स्थापत्य कला, अद्वितीय नगर नियोजन और गुलाबी सौंदर्य छटा के लिए प्रसिद्ध रहा है। इस ऐतिहासिक नगर के भव्य राज महल, स्मारक एवं किले न केवल वैभवशाली अतीत को प्रतिबिम्बित करते हैं बल्कि वास्तुशिल्प की दृष्टि से भी बेजोड़ हैं। यहां की समृद्ध संस्कृति और कलाओं की मनभावन परम्पराएँ पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

अरावली पर्वतमालाओं से घिरे इस शहर की नयनाभिराम झांकी ऐसी प्रतीत होती है मानो किसी चित्रकार ने इसे अपने कैनवास पर उकेरा हो। अतिथियों के स्वागत को आतुर शहर के बड़े–बड़े प्रवेश द्वार, भव्य एवं मनमोहक महल, छतरियां और जाली–झरोखे मध्यकालीन कला और आधुनिकता का अनोखा संगम है। जयपुर का ज्यामितीय स्वरूप, गणितीय परिशुद्धता और अनूठी संरचना इसे अद्वितीय बनाती है। जयपुर का हवामहल, जन्तर–मन्तर, सिटी पैलेस, आमेर का किला एवं महल, जयगढ़ और नाहरगढ़ दुर्ग अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए भी विख्यात है।

राजस्थान का हर शहर अपने–अपने ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों के लिए जाना जाता है। मरूधरा का हृदयस्थल अजमेर विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक धाराओं का त्रिवेणी संगम है। यह प्राचीन नगर तीर्थराज पुष्कर की पावनता और ख्वाजा गरीब नवाज के रहम तथा गिरजाघरों में बजती घंटियों की मधुर झंकार से धार्मिक विविधता का प्रतीक बना हुआ है। हिन्दुस्तान की धरती सदियों से अपने सूफियों और संतों के माध्यम से संसार को भाईचारे और विश्वबन्धुत्व का पैगाम पहुँचाती रही है।

राजस्थान का नाम अपनी गौरवमयी परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध रहा है। वीरता, शौर्य और पराक्रम की प्रतीक राजस्थानी धरती प्राचीनता की दृष्टि से अपनी विलक्षण विशेषता रखती है। पौराणिक गाथाओं में वर्णित अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं की घटनास्थली रहा यह ऐसा प्रदेश है जहां के रणबांकुरों की रक्तरंजित गौरवगाथाएँ भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखी गई हैं। वीर प्रसविनी राजस्थानी भूमि का इतिहास महाराणा कुम्भा और राणा सांगा के शौर्य, जयमल पत्ता के बलिदान, महाराणा प्रताप के स्वदेशाभिमान, भामाशाह की उदारता, पद्मिनी के जौहर, पन्ना धाय एवं गौरा धाय के वात्सल्य और वीर दुर्गादास की स्वामी भक्ति के अनुकरणीय उदाहरणों से भरा है।

चर्मण्यवती, काली सिन्ध और पार्वती नदियों से सरसब्ज, वन कुंजों से सुरभित, पौराणिक एवं ऐतिहासिक नगरी कोटा कला, साहित्य और संस्कृति की पुण्य स्थली रहा है जो अब औद्योगिक नगरी के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की गोद में बसी बूँदी नगरी शौर्य के

साथ ही चित्रकला की विशिष्ट शैली का दिग्दर्शन कराती है। राजपूत हाड़ाओं की कर्मस्थली बूँदी भव्य राज महलों, हवेलियों, मन्दिरों, सरोवरों और बावड़ियों को अपने अंक में समेटे हुए हैं। सूर्य नगरी के नाम से विख्यात मरूस्थल का प्रवेश द्वार जोधपुर भी अपने ऐतिहासिक शौर्य, सांस्कृतिक वैभव और गौरवमयी परम्पराओं के कारण सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। आर्कषक भित्ति चित्रों और नक्कासी वाले द्वारों के कारण शेखावाटी की हवेलियाँ भी पर्यटकों को लुभाती हैं।

भरतपुर घना पक्षी विहार और डीग के महलों के लिए प्रसिद्ध है तो उदयपुर अपनी मनोरम झीलों, रमणीय स्थलों और राज महलों के लिए लोकप्रिय है। चित्तौड़गढ़ एवं रणथम्भौर अपने अभेद्य दुर्गों के लिए विख्यात है। रणथम्भौर टाइगर प्रोजेक्ट के लिए भी जाना जाता है। रणथम्भौर स्थित अभ्यारण्य तथा अजमेर–पुष्कर का अवलोकन हमारे अतिथिगण भी करेंगे। कला नगरी बीकानेर और रेतीले धोरों की धरती जैसलमेर ने भी विश्व मानचित्र पर अपना विशेष स्थान बनाया है। पाली स्थित रणकपुर के मन्दिर तथा माउंट आबू के देलवाड़ा मन्दिर अपनी उत्कृष्ट पाषाण कला के लिए पहचाने जाते हैं।

देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में राजस्थान का भी विशेष योगदान रहा है। यहां के रणबांकुरों ने अपने प्राणों की आहुति देने में कभी संकोच नहीं किया। राजस्थान के स्वतत्रंता संग्राम के जनक के रूप में श्री गोविन्द गुरु, श्री अर्जुन लाल सेठी, ठाकुर केसरी सिंह बारहठ, श्री विजय सिंह पथिक, सेठ दामोदर लाल राठी, ठाकुर जोरावर सिंह और राव गोपाल सिंह खरवा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीदों के रूप में श्री प्रताप सिंह बारहठ, श्री सागर मल गोपा, श्री बालमुकुन्द बिस्सा, श्री चुन्नीलाल शर्मा, श्री रमेश स्वामी, श्री बीरबल सिंह, श्री नाना भाई खांट व काली बाई, श्री नानक भील, छात्र शान्ति एवं आनन्दी तथा श्री रूपाजी एवं कृपाजी धाकड़ का नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। राजस्थान में लोक जागरण के अग्रदूत के रूप में स्वामी कुमारानन्द, श्री मोतीलाल तेजावत, स्वामी गोपालदास, श्री लादूराम जोशी और सरदार हरलाल सिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

राजस्थान के आन्दोलनों में बिजोलिया के किसान आन्दोलन तथा भील आन्दोलन को शोषण के विरुद्ध संघर्ष के रूप में याद किया जाता है।

राजस्थान का ज़र्रा–ज़र्रा वीरता, शौर्य और बलिदान की कहानी कहता है। भारतीय सेना में राजपूताना राइफल्स का जो मुकाम है, वह किसी से छिपा नहीं है। यहां के वीरों ने सिर कटाना सीखा है पर झुकाना नहीं, तभी तो इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने कहा था कि 'राजस्थान में शायद ही ऐसा कोई गाँव हो जहां थर्मोपॉली जैसे युद्ध का मैदान न रहा हो और शायद ही ऐसी कोई माँ होगी, जिसने लियोनार्डो जैसा योद्धा पैदा न किया हो।'

कारगिल युद्ध में ऑपरेशन विजय के दौरान राजस्थान के जिन 51 सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी उनमें सबसे ज्यादा 35 सपूत शेखावाटी अंचल के थे। सेना में भर्ती होने के लिए यहां के युवाओं का जोश देखते ही बनता है। अपने सैनिक पति की कुर्बानी के बाद भी यहां की वीरांगनाएं अपने इकलौते बेटे को सेना में भेजना पसन्द करती है।

राजस्थान की धरती त्याग और उत्सर्ग के साथ–साथ प्रेम, साधना, राग–रंग, उत्साह–उमंग और कला व साहित्य का भी अमर स्रोत रही है। 'वंश भास्कर' और 'वीर सतसई' के रचयिता महाकवि

सूर्यमल्ल मिश्रण को साहित्य क्षेत्र का एक दैदीप्यमान सितारा माना गया है तो 'वीर विनोद' के रचनाकार श्यामलदास 'कविराजा' की उपाधि से विभूषित किये गये। भक्ति साहित्य की काव्यधारा में मेड़ता की मीरां ने कृष्ण भक्ति से अपने काव्यमयी पदों से 'भक्त शिरोमणि' की पदवी पाई। यहां के चारण कवियों ने अपनी ओजस्वी रचनाओं से योद्धाओं में संघर्ष की ललक जगाई है। 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता चन्द बरदाई ने जब 'चार बांस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण' कहा तो नेत्रविहीन पृथ्वीराज चौहान ने शब्दभेदी बाण को मूर्त रूप दिया। यहां के इतिहासकारों में डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा तथा मुंशी देवीप्रसाद, पंडित गंगासहाय, श्री हरविलास शारदा और श्री जगदीश सिंह गहलोत का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

राजस्थान के लिए यह गर्व की बात है कि यहां की विभूतियों को विभिन्न क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय कार्यों लिए पद्म अलंकरणों से विभूषित किया गया है। पद्मविभूषण प्राप्त उद्योगपति श्री घनश्यामदास बिड़ला, शिक्षा शास्त्री डॉ. दौलत सिंह कोठारी एवं डॉ. कालूलाल श्रीमाली, पद्मभूषण श्रीमती रतन शास्त्री एवं श्री सीताराम सेकसरिया तथा पद्मश्री से सम्मानित श्री शीशराम ओला, श्री खेलशंकर दुलर्भजी, श्री कृपालसिंह शेखावत, डॉ. पी.के. सेठी, श्रीमती अल्लाह जिलाई बाई, श्री कोमल कोठारी, श्री रामगोपाल विजयवर्गीय, श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, श्री हिसामुद्दीन उस्ता, सरदार कुदरत सिंह, श्री कैलाश सांखला और हाल ही में सम्मानित श्रीमती कृष्णा पूनिया का नाम उल्लेखनीय है।

राजस्थान की रसवन्ती भूमि का लोक जीवन पारम्परिक त्यौहारों, मेलों, उत्सवों और अनुरंजनों से सदा ही महकता रहता है। 'सात वार नौ त्यौहार' कहावत से ही यहां के त्यौहारों की अधिकता का अनुमान लगाया जा सकता है। यहां की सांस्कृतिक परम्पराएँ और जनजीवन की झांकियां रंगीले राजस्थान की ऐसी छवि अंकित करती है जो भुलाये नहीं भूलती। तीज और गणगौर यहां के लोकप्रिय पर्वों में प्रमुख हैं। राजस्थान की लोक संस्कृति, लोक गीत–संगीत और नृत्य लोगों के जीवन में रच–बस गये हैं।

कला और संस्कृति से समृद्ध राजस्थान में चित्र शैलियों की अनूठी मिसाल रही है। बूंदी को यहां के तत्कालीन शासकों ने कला, साहित्य और शिल्प के साथ–साथ चित्रकला की अमूल्य धरोहर बनाया। कोटा एवं बूँदी शैली के अलावा किशनगढ़ चित्र शैली ने भी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनाई है।

मुझे यह कहते हुए गर्व है कि राजस्थान के लोक जीवन और लोक संस्कृति ने प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जन चेतना जागृत करने की पहल सदियों पहले शुरू कर दी थी तब न तो ग्लोबल वार्मिंग की चिन्ता थी और न ही आज जैसी विषम स्थितियां विद्यामान थीं। करीब 300 वर्ष पूर्व जोधपुर जिले के खेजड़ली गाँव में विश्नोई समाज के 363 स्त्री–पुरुषों ने खेजड़ी के पेड़ों की कटाई रोकने के लिए उनसे चिपककर प्राणोत्सर्ग कर दिया, लेकिन खेजड़ियों को काटने नहीं दिया। हमारे यहां कहा जाता है – 'सिर साठे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण।' अर्थात् यदि सिर कटता हो और वृक्ष बचता हो, तो भी सौदा सस्ता समझना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए आज भले ही विश्व के पर्यावरणविद् चिन्तित हों किन्तु करीब 500 वर्ष

पूर्व इस मरूधरा के एक संत एवं विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक जाम्भोजी ने पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व को पहचानते हुए वन्य जीवों और वृक्षों को मानव जीवन की अस्तित्व रक्षा का अभिन्न अंग मानते हुए इनकी रक्षा करने की सीख दी थी। विश्नोई समाज आज भी वृक्षों और वन्य जीवों के संरक्षण लिए समर्पित भाव से प्रतिबद्ध है। काले हिरणों की प्रजाति को बचाने का श्रेय भी विश्नोई समाज को ही जाता है। हमारे यहां हरियाली के विकास के लिए मुख्यमंत्री जी और सरकार ने 'हरित राजस्थान' कार्यक्रम शुरू किया है उससे आम आदमी वृक्षारोपण के लिए प्रेरित होकर पेड़ों की हमारी पुरानी संस्कृति से जुड़ा है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से आज राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। देश और प्रदेश के विकास की गति से इसकी राजधानी जयपुर भी अछूता नहीं रहा है। प्रगति के पथ पर अग्रसर जयपुर की बढ़ती जनसंख्या और विकास से तेज हुई रफ्तार से इसमें भी महानगरीय विशेषताओं का समावेश हुआ है। बड़े–बड़े शॉपिंग मॉल्स, मल्टीप्लेक्सेस, आधुनिक शिक्षण संस्थान, जगह–जगह बने पार्क, पुल और फ्लाइओवर्स तथा बहुमंजिली इमारतों ने इसे आधुनिक स्वरूप दिया है। भावी विकास और यातायात के बढ़ते दबाव के देखते हुए शहर के आवागमन के साधनों को सुगम बनाने के लिए यहां मेट्रो परियोजना पर काम शुरू हो चुका है।

आदरणीय मित्रो, राजतंत्र से जनतंत्र की ओर प्रदेश की यात्रा आज़ादी के आन्दोलन के पुरोधाओं के त्याग, तपस्या, बलिदान एवं उत्सर्ग की भावनाओं तथा उनके द्वारा भोगी गई यातनाओं का ही प्रतिफल है। प्रदेश की छह दशक की गौरवशाली यात्रा में हमारे राजनेताओं और आधुनिक राजस्थान के निर्माताओं के प्रयासों ने ही जनतंत्र को नया स्वरूप दिया है, जिसमें हमने 'जनता का राज, जनता के द्वारा, जनता के लिये' की अवधारणा को चरितार्थ होते हुए देखा है। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की दिशा में पहल राजस्थान में ही हुई जब प्रथम प्रधान मत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने 2 अक्टूबर, 1959 को नागौर में दीप प्रज्ज्वलित कर पंचायती राज का उद्घाटन किया।

राजपूताना की 22 छोटी–बड़ी रियासतों के विलय और विभिन्न चरणों में उनके एकीकरण के बाद 30 मार्च, 1949 को राजस्थान का निर्माण हुआ। तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इसका विधिवत् उद्घाटन किया। इसी दिन जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह को राजप्रमुख, कोटा नरेश को उप राजप्रमुख के पद की शपथ दिलाई गई तथा पहली लोकप्रिय सरकार श्री हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में गठित की गई।

जनतांत्रिक राजस्थान का निर्माण स्वतंत्र भारत के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। वर्ष 1952 में हुए आम चुनावों के बाद पहली राजस्थान विधान सभा के गठन के साथ ही यहां प्रजातांत्रिक मूल्यों का बीजारोपण हुआ। राजस्थान विधान सभा ने अपनी स्वस्थ संसदीय परम्पराओं, आदर्शों और सहिष्णुता से समन्वय एवं सौहार्द को बनाये रखने में अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। प्रदेश की प्रगति और विकास में इस विधान सभा का विशिष्ट योगदान रहा है। इस सदन में ऐसी विद्वान विभूतियाँ भी विद्यमान रहीं हैं जिनके मन में पीड़ित मानवता के प्रति करुणा का सागर हिलोरे लेता रहा है।

राजस्थान विधान सभा का यह सौभाग्य रहा है कि इसके प्रारम्भिक वर्षों में ऐसे महान स्वप्नदृष्टा और बुद्धिजीवी व्यक्ति निर्वाचित होकर आये जिन्होंने विधायी कार्यों को एक मिशन के रूप में बड़ी गम्भीरता के साथ किया। उन्होंने अपने लोक आचरण से भी शालीनता के उच्च मानदंड स्थापित किये। इसी का परिणाम रहा कि यहां पहली राजस्थान विधान सभा में ही शानदार संसदीय परम्पराओं का सूत्रपात हुआ।

राजस्थान विधान सभा प्रारम्भ से ही स्वस्थ संसदीय परम्पराओं की नियामक और संवाहक रही है जिसे अपने मूर्धन्य, कल्पनाशील विद्वानों और बौद्धिक वर्ग के सदस्यों और पीठासीन अधिकारियों का मार्गदर्शन मिला है। इस विधान सभा के पीठासीन अधिकारियों ने सदन की मर्यादा और गरिमा को उत्कर्ष प्रदान करने के लिए नियमों और प्रक्रियाओं के अन्तर्गत ऐसी स्वस्थ संसदीय परम्पराओं का सूत्रपात किया है जिनका अन्य राज्य विधान मण्डलों में उदाहरण के रूप में उल्लेख होता है। मैं इस अवसर पर उन सभी विद्वजनों का स्मरण करना चाहूँगा जिन्होंने इस सदन को दिशा देकर स्वस्थ संसदीय परम्पराओं को कायम रखने में अपना योगदान दिया है।

राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे व्यक्तियों ने अपने निष्पक्ष कर्त्तव्य निर्वहन से सदन की गरिमा को बढ़ाया है। सौभाग्य से इस विधान सभा में अब तक अध्यक्ष रहे व्यक्तियों ने अपनी दूरदर्शिता, निष्पक्षता और बुद्धिमत्ता के द्वारा लोकतांत्रिक परम्पराओं को सुदृढ़ बनाने में अविस्मरणीय योगदान दिया है। श्री नरोत्तमलाल जोशी प्रथम विधान सभा अध्यक्ष थे जिन्होंने अपने कार्यकाल में न केवल स्वस्थ संसदीय परम्पराओं का सूत्रपात किया बल्कि नई संसदीय परिपाटियाँ भी प्रारम्भ कीं।

श्री रामनिवास मिर्धा ने अपने सौम्य व्यवहार, मृदुवाणी, निष्पक्षता और न्याय–बुद्धि का परिचय देकर संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। श्री निरंजन नाथ आचार्य कानून की गूढ़ता में भी सहृदयता की छाप छोड़ते थे। श्री रामकिशोर व्यास ने भी गम्भीरता और निष्पक्षता से सदन का संचालन कर प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह ने हमेशा शालीनता, मृदुता और सदाशयता का परिचय दिया है। श्री पूनम चन्द विश्नोई निर्भीक, स्पष्ट और नीतिसम्मत निर्णय तत्परता से देते थे। श्री हरिशंकर भाभड़ा ने विधान सभा की गरिमा और स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने के साथ ही सदन की कार्यवाही के संचालन में प्रक्रियागत नवीनता लाने की पहल की। प्रारम्भिक अध्यक्षों ने जो स्वस्थ परम्पराएँ स्थापित कीं उन्हें स्वस्थ दिशा में आगे बढ़ाने का काम किया श्री गोपाल सिंह, श्री गिरिराज प्रसाद तिवारी, श्री शांतिलाल चपलोत, श्री समर्थलाल मीणा, श्री परसराम मदेरणा और श्रीमती सुमित्रा सिंह ने।

राजस्थान विधान सभा ने अपने कार्यकरण से ऐसे अनेक संसदीय कीर्तिमान स्थापित किये हैं जो अन्य राज्य विधान सभाओं के लिए अनुकरणीय हो सकते हैं। पूर्व मुख्य मंत्री स्व. श्री हरिदेव जोशी ने पहली से दसवीं विधान सभा तक लगातार दस बार विधायक निर्वाचित होकर अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया था। दीर्घ काल तक सदन के नेता रहे श्री मोहनलाल सुखाड़िया की असाधारण सफलता उनके सहनशील, व्यवहारकुशल और सौम्य लोक व्यक्तित्व की परिचायक रही है। संसदीय

परम्पराओं को पोषित करने वाले श्री भैरोंसिंह शेखावत सदन के नेता और प्रतिपक्ष के नेता दोनों पदों पर रहने के बाद भारत के उप राष्ट्रपति के पद पर आसीन रहे।

राजस्थान विधान सभा में अनेक गौरवशाली अवसर आये हैं जब यहाँ विशिष्ट और गण्यमान्य व्यक्तियों का आगमन हुआ। ऐतिहासिक अवसर था जब वर्ष 1953 में भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सदन के प्रांगण में पहली विधान सभा के सदस्यों को सम्बोधित किया। विदेशों से भारत यात्रा पर आने वाले संसदीय शिष्टमण्डल भी रंगीले राजस्थान की यात्रा का लोभ संवरण नहीं कर पाते।

6 नवम्बर, 2001 का दिन राजस्थान विधान सभा के लिए विशेष महत्त्व का दिन रहा जब महामहिम राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन ने इस भव्य भवन का लोकार्पण किया। आधुनिक और परम्परागत शिल्प विधान का सम्मिश्रण यह भवन नगर नियोजन और उत्कृष्ट वास्तुशिल्प के लिए विख्यात राजस्थान का एक अद्‌भुत आकर्षण माना जाता है।

राजस्थान के वास्तुशिल्प और स्थापत्य कला का दिग्दर्शन कराने वाले इस भवन का बाहरी भाग जोधपुर, बंसी–पहाड़पुर और करौली के पत्थरों से निर्मित होने के कारण गुलाबी आभा लिये हुए है। लगभग 17 एकड़ क्षेत्रफल में फैले तथा 6 लाख वर्ग फुट आच्छादित क्षेत्र वाले इस भवन में राजस्थान की प्रसिद्ध कलात्मक शैलियों से सुसज्जित एवं आकर्षक चार प्रवेश कक्ष (लाउंज) बने हुए हैं।

राजस्थान विधान सभा ने भारत की संसद और विश्व के अन्य लोकतांत्रिक देशों से प्रेरणा प्राप्त कर संसदीय परम्पराओं को पुष्ट करने और उन्हें व्यवहार में लाकर सशक्त, प्रभावपूर्ण और अनुकरणीय बनाने का हरसंभव प्रयत्न किया है। इस विधान सभा ने सदा ही जनता की आशाओं और अभिलाषाओं के अनुरूप कार्य करके कुशलता का परिचय दिया है। यहां आरम्भिक काल में ही भूमि सुधार की दृष्टि से कई क्रांतिकारी विधेयक पारित किये गये। राजस्थान एक ओर जहां भूमि सुधारों की दिशा में कार्य करने वाला अग्रणी राज्य रहा है वहीं इसने सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में जाग्रति लाने वाले कई महत्त्वपूर्ण कानून बनाये हैं, इसका श्रेय राज्य के लोकहितकारी मंत्रिमंडल और विधान सभा के जागरूक सदस्यों को जाता है।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में राजस्थान विधान सभा ने सम्पूर्ण राष्ट्र में पहल करते हुए गत वर्ष से प्रश्नों की प्रक्रिया से सम्बिन्धत विधान सभा कार्यवाही का अहम् व बड़ा भाग इलेक्ट्रोनिक माध्यमों का प्रयोग करते हुए ऑनलाइन प्रारंभ किया है। इस प्रक्रिया के तहत वर्तमान में विधान सभा सचिवालय व राज्य सरकार के समस्त विभाग प्रश्नों व उनके उत्तरों का आदान–प्रदान कम्प्यूटर के जरिये ही कर रहे हैं। ऑटोमेशन के अगले चरण में माननीय सदस्य भी अपने प्रश्नों को अपने क्षेत्र अथवा निवास से विधान सभा सचिवालय को प्रेषित कर सकेंगे। एक त्वरित आकलन के अनुसार इस प्रक्रिया के अपनाने से प्रति वर्ष लगभग एक करोड़ कागज (पेपर शीट्स) व तद्नुसार उतने ही प्राकृतिक संसाधनों की बचत संभव है। यदि राज्य सभा, लोक सभा और समस्त राज्य विधान मण्डल इस इको–फ्रैण्डली प्रक्रिया को अपनाये तो निश्चित रूप से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बहुत बड़ा योगदान हो सकेगा।

माननीय सदस्यों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर प्रश्न काल के तुरन्त पश्चात् उसी दिन विधान सभा की वेबसाइट पर रख दिये जाते हैं जो माननीय सदस्यों के साथ–साथ जनसाधारण के लिए भी उपलब्ध हो जाते हैं। माननीय सदस्य प्रश्न के माध्यम से अन्तः सत्रकाल में भी जनहित के मामलों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया नियमों में अन्त:सत्रकाल में अतारांकित प्रश्न पूछने का प्रावधान है।

राजस्थान विधान सभा ने प्रजातंत्र को मजबूत बनाने के साथ–साथ कानून के शासन, प्रशासन में पारदर्शिता, वंचितों के मानवाधिकार और नारी के सशक्तीकरण को प्रभावी ढंग से उभारा है। सवाई मानसिंह टाउन हाल के पुराने विधान सभा भवन से ज्योति नगर के इस भव्य भवन तक की यात्रा केवल सुविधाओं और आधुनिकता तक ही सीमित नहीं रही है बल्कि यह उन परम्पराओं और कार्यशैलियों का भी आधुनिकीकरण है जो देशी रियासतों की विधान परिषदों से प्रारम्भ होकर राजप्रमुख सवाई मानसिंह के उद्घाटन अभिभाषण से शुरू हुई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी लोकतांत्रिक विरासत को समृद्ध बनाने के लिए युवा पीढ़ी को प्रशिक्षित करें ताकि वह समय की गति के साथ आगे बढ़े और अपने समाज, प्रान्त और राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि और खुशहाली में योगदान दें।

इससे पहले कि मैं अपनी बात समाप्त करूँ उदार वित्तीय सहायता और संसाधन सम्बन्धी समस्त सहयोग के लिए मैं राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री अशोक गहलोत एवं राज्य सरकार के अधिकारियों तथा राजस्थान विधान सभा सचिवालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके उत्साह और सहयोग के बिना ऐसा गरिमामय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित करना सहज संभव नहीं था।

मैं आशा करता हूँ कि हमारे अतिथिगण जयपुर के अपने लघु प्रवास में यह देखेंगे कि जयपुर पर्यटन की दृष्टि से किस प्रकार विश्व में आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। आप यह भी देखेंगे कि 'अतिथि देवो भवः' की पावन भावभूमि से अनुप्राणित यहां आतिथ्य सत्कार की परम्परा कितनी समृद्ध है। यद्यपि हमने इस बात का पूरा प्रयास किया है कि आपकी जयपुर यात्रा सुखद, आरामदायक और अविस्मरणीय रहे और आप इस यात्रा की मधुर स्मृतियाँ हमारी मंगल कामना के रूप में अपने साथ लेकर जायें, किन्तु यह एक बड़ा आयोजन है इसलिए संभव है कि हमसे कहीं पर व्यवस्था, सुविधा अथवा आवभगत में कोई कमी रह जाये तो इसके लिए हमारे अतिथिगण कृपया हमें क्षमा करेंगे।

अंत में इस आशा और विश्वास के साथ अपनी वाणी को विराम दूँगा कि इस सम्मेलन में होने वाले सार्थक विचार–विमर्श से न केवल जनतांत्रिक शासन व्यवस्था में स्वस्थ संसदीय कार्य संस्कृति परिपुष्ट होगी अपितु इसमें और अधिक निखार आयेगा।

धन्यवाद, जय हिन्द।

❖❖❖

Respected Madam Speaker, Lok Sabha & Chairperson of the Conference, Smt. Meira Kumar ji, Respected Vice-Chairman, Rajya Sabha Shri K.Rahman ji, respected presiding officers from State Legislatures, officers, ladies and gentlemen,

It is giving me hearty pleasure in welcoming you all to Jaipur, the capital of Rajasthan which is world renowned as the Pink City. After 32 years, Jaipur has again got the honour of hosting this prestigious conference. Planned and founded in 1727 AD by Maharaja Sawai Jai Singh, this city is famed for its enchanting architecture, unparalleled town-planning and pinkish hue. The grand palaces, monuments and forts of this historic city not just mirror its glorious past but are beyond comparison from the point of view of vaastushilp. The rich culture and alluring art traditions of the place magnetize tourists instinctively towards it.

Surrounded by hills of Aravali range, the vistas of this eye-soothing city present such a picture as if a maestro painter has put his vivid imagination on the canvas. Eager to welcome the guests, the imposing entrance doors of the city, grand and spellbinding palaces, canopies and screened windows are a unique combination of medieval and modern art. Geometric design, mathematical purity and unique form make it without parallel. Jaipur's Palace of Wind (Hawa Mahal), Observatory, City Palace, Amber's Fort and Palace, Jaigarh and Nahargarh forts are renowned for their historical background.

Each city of Rajasthan is known for its historical and other places of tourist interest. Ajmer, the heart of this predominantly desert land, is a triune of education, culture and religion. This historical city is a symbol of religious harmony where sacredness of important pilgrimage centre Pushkar, the piety of Khwaja Garib Nawaj and ringing bells of churches create a symphony of religious diversity. The land of Hindustan has been propagating for centuries the message of love and world brotherhood through its innumerable Sufis and saints. Khwaja Moinuddin Hasan Chisti was alsoone such saint.

Rajasthan is acclaimed for their glorious traditions. Symbolic of bravery, chivalry and heroism, the land of Rajasthan has its own special characteristic from the perspective of historicity. The scene of very many important mythological events, it is a state whose blood-soaked heroic tales of warriors have been written in gold letters in the annals of India. The history of this hero-producing land of Rajasthan is brimming with exemplary tales of chivalry of Maharana Kumbha and Rana Sanga, sacrifice of Jaimal Patta, patriotism of Maharana Pratap, philanthropy of Bhamashah, honour-oriented self-immolation of Padmini, rare child-heir rearing of Pannya Dhay and Gaura Dhay and loyalty of Veer Durgadas.

Enriched with Charmanyavati, Kali Sindh and Parvati rivers and covered with forests, mythological and historical city of Kota has been a centre of art, literature and culture which has now assumed a distinct identity of an industrial city. Placed in the lap of Aravali hill ranges, Bundi along with tales of chivalry exhibits a unique style of painting.

Land of Hada Rajputs, Bundi encompasses grand palaces, havelis, temples, ponds and baories. Renowned by the name of Sun City, Jodhpur the entrance to the Desert is also a great tourist attraction due to deeds of historical chivalry, cultural heritage and glorious traditions. Havelis of Shekhawati region enchant the tourists because of their unrivalled architecture, delightful murals and emblazoned doors.

If Bharatpur is renowned for Ghana Bird Sanctuary and palaces of Deeg, then Udaipur is famed because of its serene lakes, royal palaces and other bewitching places. Chittorgarh and Ranthambhore are renowned for their impregnable forts. Ranthambhore is known for Tiger Project also, which our honoured guests will be visiting. Artistic city Bikaner and sand-duned Jaisalmer have also carved a special place for themselves on the world tourist map. Pali situated temples of Ranakpur and Delwara temples of Mount Abu are also famous for their outstanding stone work.

Rajasthan has made special contribution towards the nation's freedom struggle. Its freedom fighters did not hesitate in laying their lives. The names of Shri Govind Guru, Shri Arjun Lal Sethi, Thakur Kesari Singh Barahath, Shri Vijai Singh Pathik, Seth Damodar Lal Rathi, Thakur Jorawar Singh and Rao Gopal Singh Kharwa are particularly noteworthy as institutor of freedom struggle in Rajasthan. Among the unforgettable martyrs of freedom struggle, the names of Shri Pratap Singh Barahath, Shri Sagar Mal Gopa, Shri Balmukund Bissa, Shri Chunni Lal Sharma, Shri Ramesh Swami, Shri Birbal Singh, Shri Nana Bhai Khant and Kali Bai, Shri Nanak Bhil, Chhatra Shanti and Aanandi and Shri Rupaji and Kripaji Dhakar are taken with great pride. And among the flag bearers of public enlightenment in Rajasthan, the names of Swami Kumaranand, Shri Motilal Tejawat, Swami Gopaldas, Shri Laduram Joshi and Sardar Harlal Singh deserve special mention.

In the agitations of Rajasthan, movement of farmers of Bijolia and Bhil movement are remembered as struggle against exploitation.

Each nook and corner of Rajasthan tells stories of bravery, chivalry and sacrifice. The prestige associated with Rajputana Rifles in the Indian Army is hidden from none. The braves of this land have preferred their heads removed from their bodies instead of submitting to the enemy. For this very reason, historian Col. James Todd has written that there would rarely be a village where is no Thermopylae type arena and there would rarely be a mother who has not given birth to a Leonardo type warrior.

In Operation Vijay of Kargil War, of the 51 soldiers of Rajasthan who laid their lives, 35 were proud sons of Shekhawati region. The enthusiasm of youths of this region to gain entry into the Indian Army is marvelous and seen to be believed. Despite witnessing their soldier-husbands sacrificing their lives at the altar of land, their proud widows prefer their only sons again with the Army.

The land of Rajasthan, in addition to sacrifice and renouncement has been a perennial source of love, meditation, vibrancy, vigour, art and literature. Author of '*Vansh Bhaskar*'and '*Veer Satsai*', poet laureate Suryamall Mishran was considered as the dazzling star of literary firmament and the creator of '*Veer Vinod*', Shyamaldas was honoured with the title of '*kaviraja*'. For the poetic paeans to God, Meera of Merta was recognized as the '*Bhakt Shiromani*' (biggest worshipper) due to her worship of Lord

Krishna in rhythmical poetic stanzas. Charan poets of the land have ignited the flames of struggle amongst the warriors through their spirited writings. When Chand Bardai, the creator of 'Prithviraj Raso' uttered '*char bans Chaubis gaj angul ashta praman*' (means adopted to convey the direction and distance of the targeted enemy), the blind Prithviraj Chauhan formalized the arrow on verbal instructions. In the historians of this place, the names of Dr. Gaurishankar Heerachand Ojha, Munshi Deviprasad, Pandit Gangasahai, Shri Harbilas Sharda and Shri Jagdish Singh Gahlot are especially noteworthy.

It is a matter of pride for Rajasthan that denizens of this state have been bestowed with different '*padam*' titles for noteworthy contribution in different fields. Amongst the *Padamvibhushan* awardees, industrialist Shri Ghanshyam Das Birla, educationist Dr. Daulat Singh Kothari and Dr. Kalulal Shrimali feature prominently; in the *Padambhushan* awardees, names of Smt. Ratan Shastri and Shri Sitaram Seksaria immediately come to mind; and in the *Padamshri* awardees, the names of Shri Sheeshram Ola, Shri Khelshankar Durlabhji, Shri Kripal Singh Shekhawat, Dr. P.K.Sethi, Smt. Allah Jilai Bai, Shri Komal Kothari, Shri Ramgopal Vijaivargiya, Smt. Laxmikumari Chundawat, Shri Hisamuddin Usta, Sardar Kudrat Singh, Shri Kailash Sankhala and recent Smt. Krishna Punia can be proudly taken.

The public life of the animated Rajasthan is ever alive with traditional festivals, fairs, occasions and merriments. The famed adage about this land '*saat vaar nau tyohar*' (nine festivals in seven days of a week) gives a idea about the profusion of festivals here. Its cultural traditions and glimpses of public life leave such an indelible imprint which can never be erased. Teej and Gangaur are prominent among the popular festivals here.

The folk culture, the folk songs and folk dances of Rajasthan have taken deep roots in the life of its people. Rich with art and culture, Rajasthan has provided unique forms of different painting styles. Bundi, was associated with a distinct style of its paintings. Its rulers left a valuable legacy of it, in addition to equal contribution in the field of art, literature and crafts. Along with the styles of Kota and Bundi, paintings of Kishangarh style have also made an identity of its own at international level.

I can say it with great pride that the folk life and folk culture of Rajasthan had initiated centuries ago steps towards public enlightenment about nature and environment when there was neither a threat of global warming nor the adverse situations of present times. About 300 years ago, in the Khejadali village of Jodhpur 363 men and women of Vishnoi tribe prevented tree felling by embracing the ill-fated trees and laying their lives in the process, yet did not allow felling of khejari trees. It is said that '*sir saathe roonkh rahe, to bhi sasto jaan*' i.e. if body is beheaded and the trees survive even then it should be considered a non-costly bargain.

Today the environmentalists may be worried about the environment protection and conservation; however, about 500 years ago a saint of this land and founder of Bishnoi tribe, Jambhoji recognizing the importance of environment conservation taught to protect wild life and trees by terming them indispensable for the survival of human race. Bishnois are still dedicated to the conservation of trees and wild life with full

devotion. The credit to save black buck specie goes entirely to Bishnoi tribe. With the objective of growth of vegetation, hon'ble Chief Minister and the Government of Rajasthan have initiated '*Harit Rajasthan'* (Green Rajasthan) campaign and due to this, common man are encouraged towards tree plantation and have rejoined the traditional culture of adoption of trees.

Geographically speaking, Rajasthan today is the biggest state in the country. Jaipur, the capital of Rajasthan, has not remained untouched with the all round growth in the state and the country. Heading on the road to progress, the burgeoning population of Jaipur and the rapid development has led it gaining the characteristics of metropolitan cities. Big shopping malls, multiplexes, modern educational institutions, numerous parks, flyovers and multi-storeyed buildings have given it a new look. Looking to the prospective development and increasing pressure of traffic, work on Metro Project has begun to ease and facilitate transportation in the city.

Hon'ble friends, the journey of the state from royalty to democracy is the result of renunciation, sacrifice and the undergone agony. In the state's six decades of glorious journey, the efforts of our statesmen and creators of modern Rajasthan have given new form to democracy, in which we have seen the formalization of the concept of 'rule of public, rule by public and rule for public'. I feel very happy in saying that initiative in the direction of democratic decentralization began firstly in Rajasthan when the first Prime Minister of India, Pandit Jawahar Lal Nehru inaugurated the panchayati raj system by lighting a lamp in Nagaur on 2nd October, 1959.

Rajasthan came into being on 30th March, 1949 after the merger of 22 big and small princely states and their unification process spread over several stages. The then Union Home Minister Shri Vallab Bhai Patel duly inaugurated it. The same day Maharaja Sawai Man Singh of Jaipur and ruler of Kota state were administered the oaths of Rajpramukh and Up-Rajpramukh, respectively, and the first popular government was constituted under the leadership of Shri Heera Lal Shastri.

Formation of democratic Rajasthan is a golden chapter in the annals of Independent India. After the General Elections of 1952 and with the constitution of first Rajasthan Legislative Assembly, seeds of democratic principles were sown here. The Rajasthan Legislative Assembly has presented - with its healthy parliamentary conventions, ideals and tolerance - an exemplary example in maintaining coordination and cordiality. There has been special contribution of this Legislature in the progress and development of the State. This House has had such luminaries whose hearts was forever associated with the suffering humanity.

Rajasthan Legislative Assembly has the good fortune that in its initial years, such visionary and intellectuals leaders were elected who performed the legislative work diligently, taking it as a mission in life. They with their public conduct established high standards of dignity. Resultantly, right from the very first Rajasthan Legislative Assembly, sound parliamentary conventions were laid down.

Rajasthan Legislative Assembly, from the very beginning, has been the conveyer of healthy parliamentary conventions which has in the process been guided by the

erudite, farsighted and intellectual members and presiding officers. The presiding officers of this Legislative Assembly have with the larger objective of exalting the accepted behaviour and dignity of the House, laid down such healthy parliamentary conventions under its Rules of Procedure which other state Legislatures quote as examples. On this occasion, I would like to remember and pay homage to such learned members who have contributed their might to maintain the healthy parliamentary conventions of the House.

The great personalities who have adorned the Office of the Speaker of the Rajasthan Legislative Assembly have enhanced the dignity of the House by impartial discharge of their duties. Fortunately, the till date Speakers of this Legislative Assembly have with their foresightedness, impartiality and intellect made unforgettable contribution to the strengthening of the democratic principles. Shri Narottamlal Joshi was the first Speaker of the Rajasthan Legislative Assembly who in his tenure not only laid down healthy parliamentary conventions but also initiated new parliamentary practices.

Shri Ramniwas Mirdha with his kind behaviour, soft-spokenness, impartiality and justice-oriented mentality, garnered for himself a special place in the parliamentary democratic system. Shri Niranjan Nath Acharya used to leave an imprint of large-heartedness even in the intricacies of law. Shri Ramkishore Vyas also presented encouraging and exemplary example by the serious and impartial conduct of the business of the House.

Maharawal Shri Laxman Singh also exhibited dignity, soft-spokenness and amiable nature every time. Shri Poonam Chand Bishnoi used to render fearless, lucid and lawful rulings instantaneously. Shri Harishankar Bhabhra, in addition to maintaining the dignity and autonomy of the Legislative Assembly, initiated procedural innovations in the conduct of the business of the House. The healthy conventions established by the initial Speakers were taken forward in the same spirit by the later Speakers, viz., Shri Gopal Singh, Shri Giriraj Prasad Tiwari, Shri Shantilal Chaplot, Shri Samarthlal Meena, Shri Parshram Maderna and Smt. Sumitra Singh.

Rajasthan Legislative Assembly in its hitherto lifespan has established many parliamentary milestones which can be a beacon to other State Legislatures. Former Chief Minister, late Shri Harideo Joshi created an unrivalled feat of continuously getting elected to the Legislative Assembly for 10 uninterrupted terms, from 1st Legislative Assembly to 10th Legislative Assembly. Leader of the House for a long time, Shri Mohanlal Sukhadia's extraordinary success is reflective of his tolerance, good-relations oriented and kind personality. Shri Bhairon Singh Shekhawat, who also enhanced the parliamentary conventions, was both Leader of the House and Leader of Opposition three times each and later ascended the high Office of the Vice-President of India.

There have been many proud occasions in the history of Rajasthan Legislative Assembly when very distinguished personalities came here. One such historic occasion was in the year 1953 when the first Prime Minister of India, Pandit Jawahar Lal Nehru addressed the members of the Rajasthan Legislative Assembly on the floor of the House. The parliamentary delegations from abroad coming to India also cannot resist the temptation of visiting the colourful Rajasthan.

The day of 6th November, 2001 is a special day for the Rajasthan Legislative Assembly when H.E. the President of India dedicated this beautiful Legislative Assembly building to the public. A mixture of modern and traditional architecture, this building is a unique attraction of Rajasthan which is generally famed for its town planning and excellent vaastu craft.

The façade of this building which reflects the vaastu craft and architecture of Rajasthan is pink hued because of the use of stones from Jodhpur, Banshi Paharpur and Karauli. Spread over an area of about 17 acre and covering a built up area of 6 lakh square feet, this building has prolific use of distinct artistic architectural designs of Rajasthan in its decorated and attractive lounges depicting distinct styles of different regions of the state.

Rajasthan Legislative Assembly, drawing encouragement from the Parliament of India and other democratic countries of world, has made every effort to maintain and enhance the parliamentary conventions, making them strong, effective and exemplary by adopting them in its day-to-day affairs. This Legislative Assembly has shown adeptedness by always working in accordance with the people's hopes and aspirations. Here in the early years of its life were passed many radical bills oriented towards land reforms. Rajasthan, on the one hand, has been in the forefront of working in the direction of land reforms; at the same time, it has enacted many important legislations oriented towards enlightenment in social and economic spheres. Credit for it goes to the state's public welfare oriented Cabinets and vigilant members of the Legislative Assembly.

Appreciating the dire requirement of conservation of environment, Rajasthan Legislative Assembly taking initiative in the whole county has begun use of electronic medium in the important and big part of proceedings of the Legislative Assembly by putting the entire process of question asking and answering thereof by government departments to the Assembly online. In this process, presently the Legislative Assembly Secretariat and the departments of the State Government are exchanging questions and answers thereto through computers and internet. In the next phase, the Hon'ble members could forward their questions to the Assembly Secretariat while sitting in their constituencies or homes. By a quick estimate, the adoption of this practice will lead to a saving of about a crore pages, and the equivalent natural resources, a year. If Rajya Sabha, Lok Sabha and other State Legislatures also adopt this eco-friendly practice, it can certainly be a very big contribution towards environment conservation.

Answers of the questions asked by the members are put on the website of the Legislative Assembly same day soon after the Question Hour which becomes available to the general public along with the hon'ble members. Hon'ble members can seek information on matters of public interest through questions in the inter-session period also. For this, there is a provision in the Rules of Procedure to ask unstarred questions during inter-session period.

Rajasthan Legislative Assembly, in addition to making democracy stronger, effectively brought into being rule of law, transparency in administration, human rights of deprived sections and women empowerment. The journey from the historic old premises of Sawai Man Singh Town Hall to this beautiful building in Jyoti Nagar is not

confined just to the facilities and modernity but is revamping also of those traditions and working which began with the Legislative Council of the princely states and with the inaugural address of the Rajpramukh, Sawai Man Singh. Today the need of the hour is that we tutor and mould the young generation to further enrich the democratic legacy so that they move with the times and fulfill the requirements of society, state and nation as also their prosperity and happiness.

Before I conclude, I would like to thank the Chief Minister and officers of the State Government for their financial help and logistical support as also the officers/officials of the Rajasthan Legislative Assembly Secretariat without whose ceaseless enthusiasm and cooperation, the successful hosting of this prestigious conference would not have been possible.

I hope, our guests during their brief stay would see as to how the city of Jaipur has continued to be a cynosure of tourist attraction all over the world. You will also see how enriching is the culture of hospitality that prevails in this sacred land which is synonymous with the spirit of '*atithi devo bhavah*' (guests are gods). Though we have made every effort to ensure that your Jaipur visit becomes a pleasing, comfortable and unforgettable experience and you carry happy memories of it; however, it is a big function and, quite possibly, totally untended shortcoming in the arrangements, facilities and hospitality may lurk here and there. Therefore, we would seek kind indulgence of our honoured guests and request their magnanimity.

I would conclude with the hope and firm belief that with the meaningful deliberations in the conference, the culture of healthy parliamentary working and the democratic government system will not just be strengthened but will also ensure improvement therein, wherever warranted.

Thanking you. Jai Hind.

❖❖❖

भारत में विधायी निकायों के
पीठासीन अधिकारियों का 76वां सम्मेलन

श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत
माननीय अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा
द्वारा

स्वागत उद्‌बोधन

बुधवार, दिनांक 21 सितम्बर, 2011
जयपुर (राजस्थान)

76th Conference of Presiding Officers of Legislative Bodies in India

WELCOME ADDRESS

by

Shri Deependra Singh Shekhawat
Hon'ble Speaker,

Rajasthan Legislative Assembly

Wednesday, 21st September, 2011

JAIPUR (Rajasthan)